मनोविच्छेदी विकृतियाँ (Dissociative Disorders)

APPOINTMENTS

मनोविच्छेदी विकृति एक महत्वपूर्ण मानसिक रोग है। इसमें साधारणतः व्यक्तित्व दो भागों में विभाजित हो जाता है जिन्हें अलग-अलग देखा भी जा सकता है। इसमें रोगी की मानसिक प्रक्रियाएँ विशेषकर स्मृति या चेतना विच्छेदित हो जाती है जिससे व्यक्ति स्वयं को तथा वातावरण को अलग ही ढंग से प्रत्यक्षण करने लगता है अर्थात् मनोविच्छेदी विकृति का सबसे प्रमुख लक्षण विच्छेदन (dissociation) है। यह विच्छेदन अहम् की रक्षा करने के उद्देश्य से होता है, जिससे चिंता उत्पन्न करने वाली प्रक्रियाओं से छुटकारा प्राप्त होता है।

Cameron के अनुसार — "मनोविच्छेदी प्रतिक्रियाएँ वे प्रयास हैं, जिनसे अत्यधिक तनाव व चिन्ता से छुटकारा प्राप्त करने के लिए व्यक्तित्व कार्य के कुछ अंशों को शेष भाग से पृथक् कर दिया जाता है।" इस प्रकार के व्यवहार में अलगीकरण, दमन तथा निषेध मुख्य रक्षात्मक युक्तियों का उपयोग होता है। इस रोग के रोगियों को परिचित स्थान, वस्तुएँ, व्यक्ति आदि अपरिचित दिखने लगते हैं। जिसमें निम्नांकित पाँच तरह की अनुभूतियाँ रोगी को अधिक होती हैं —

→ स्मृतिलोप — इसमें रोगी अपने ही अनुभवों को आंशिक या पूर्णरूप से याद करने में असमर्थ होता है।

→ व्यक्तित्वलोप — इसमें रोगी खुद को एक अलग ही प्राणी समझता है। वह स्वयं को स्वयं से नहीं जोड़ पाता है।

→ वास्तविकता लोप — इसमें रोगी को पूरा वातावरण अविश्वसनीय एवं अवास्तविक लगने लगता है।

→ पहचान भ्रांति — इसमें रोगी अपनी पहचान को भूल जाता है, कि वह कौन है?, क्या है? आदि-आदि।

→ पहचान बदलाव — इसमें रोगी कभी-कभी आश्चर्यजनक कार्य कर देता है जिसका उसे कुछ भी पता नहीं होता। जैसे- बिना सीखे कुछ ही विदेशी भाषा का प्रयोग करना आदि।

अर्थात् मनोविच्छेदी विकृति में रोगी को विच्छेदन का भी अनुभव होता है, उसमें कई तरह की अनुभूतियाँ होती हैं, जिनमें कुछ विचित्र एवं नाटकीय प्रकार की भी होती हैं।

NOTES

मनोविच्छेदी विकृति के प्रकार :—

मनोविच्छेदी विकृति के कई प्रकार हैं, जिनमें निम्नांकित चार प्रमुख हैं —

- मनोविच्छेदी स्मृतिलोप (Dissociative Amnesia)
- मनोविच्छेदी आत्मविस्मृति (Dissociative Fugue)
- मनोविच्छेदी पहचान विकृति (Dissociative Identity Disorder or DID)
- व्यक्तित्वलोप विकृति (Depersonalization Disorder)

मनोविच्छेदी स्मृतिलोप

इस विकृति में रोगी अपने ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत अनुभूतियों का स्मरण पूर्णतः या आंशिक रूप से नहीं कर पाता है, जिसका स्वरूप तनाव उत्पन्न करने वाला होता है या मानसिक आघात उत्पन्न किये हुए होता है। इससे रोगी का सामाजिक एवं अन्य समायोजन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्मृतिलोप के कई प्रकार हैं —

→ पश्चगामी स्मृतिलोप — यह एक तरह का स्थानीकृत भूलने की बिमारी है, जिसमें व्यक्ति मानसिक आघात उत्पन्न करने वाले घटना के ठीक पहले की अनुभूतियों को भूल जाता है।

→ उत्तर आघातीय स्मृतिलोप — यह भी एक स्थानीकृत स्मृतिलोप है। इसमें व्यक्ति मानसिक आघात उत्पन्न करने वाली घटना के बाद की अनुभूतियों को याद नहीं रख पाता है।

→ अग्रगामी स्मृतिलोप — इसमें रोगी किसी नयी अनुभूति को प्रत्याह्वान करने में खुद को असमर्थ पाता है।

→ चयनात्मक स्मृतिलोप — इसमें रोगी किसी घटना से संबंधित सभी सूचनाओं का स्मरण नहीं कर पाता है, कुछ ही सूचनाओं का प्रत्याह्वान वह कर पाता है।

→ सामान्यीकृत स्मृतिलोप — इसमें रोगी अपने पूरे जिंदगी की घटनाओं को याद नहीं कर पाता है।

→ सतत स्मृतिलोप — इसमें रोगी एक खास समय तक के ही अनुभूतियों को याद कर पाता है, उसके बाद के अनुभूतियों को याद नहीं कर पाता।

→ क्रमबद्ध स्मृतिलोप — इसमें रोगी कुछ विशेष श्रेणी या घटना से संबंधित सूचनाओं का प्रत्याह्वान नहीं कर पाता है। जैसे—

Scanned with CamScanner

किसी विशेष व्यक्ति या परिवार से संबंधित सभी अनुभूतियों को याद नहीं कर पाना।

इसमें सामान्यीकृत स्मृतिलोप, सतत स्मृतिलोप तथा आवर्त्त स्मृतिलोप को अधिक गंभीर माना गया है। मनोविच्छेदी स्मृतिलोप बच्चों से लेकर व्यस्क तक किसी भी उम्र समूह में हो सकता है। जिसकी अवधि कुछ मिनट से लेकर कुछ वर्षों तक भी हो सकती है। जब स्मृतिलोप की स्थिति समाप्त हो जाती है तो रोगी को भूला गया विषय-वस्तु पुनः याद आ जाती है। अध्ययनों से यह पता चला है, कि रोगी इस प्रकार की स्थिति के माध्यम से अपनी दुःखद संवेगात्मक स्थितियों का बचाव करता है।

मनोविच्छेदी आत्मविस्मृति (Dissociative fugue)

'Fugue' लैटिन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ-'पलायन या भागना' होता है। इसमें व्यक्ति में स्मृतिलोप के लक्षण तो होते ही हैं, साथ-ही-साथ रोगी अपने वर्तमान पर्यावरण को छोड़कर अन्य स्थान पर चला जाता है। वह अपने घर से पलायन कर जाता है और इधर-उधर भटकता रहता है। किसी नये स्थान पर पहुँचकर वह वहाँ नये नाम, नया धर्म बताकर एक नयी जिंदगी की शुरुआत करता है। कई दिन, महीना तथा कभी-कभी कई सालों के बाद, जब यह स्थिति समाप्त होती है तो रोगी खुद को नये जगह में पाकर आश्चर्यचकित रह जाता है और फिर वह इस नयी जिंदगी के बारे में सब कुछ भूल जाता है। उसे यह समझ भी नहीं आता कि वह यहाँ कैसे और क्यों आया।

Fisher के अनुसार — "आत्मविस्मृति एक उन्मादी आक्रमण है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन को भूल जाता है और अपने पर्यावरण को भी भूल जाता है।"

अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि मनोविच्छेदी आत्मविस्मृति की शुरुआत किसी-न-किसी ऐसी घटना के बाद

होता है. जिसमें व्यक्ति को काफी तीव्र मानसिक आघात लगा होता व्यक्ति इस दुःखद स्थिति को भूल जाने या दूर हट जाने की इच्छा रखता है। परंतु वह ऐसा करने की स्थिति में खुद को नहीं पाता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः अपरिपक्व, आत्मकेन्द्रित तथा अत्यधिक सुझावग्रहणशील होते हैं। जब व्यक्ति को इन दुखद परिस्थितियों से छुटकारा कहीं संभव नहीं दिखता तो उनमें मनोविच्छेदी आत्म विस्मृति के रोग उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। अन्ततः तनावपूर्ण परिस्थिति इतना अधिक असहनीय हो जाता है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से संबंधित पहलू एवं इच्छाओं को दमित कर देते हैं। यही दमन कुछ समय बाद मनोविच्छेदी आत्मविस्मृति का कारण बनता है। इस रोग में व्यक्ति बिल्कुल सामान्य दिखता है और परिवेश से जटिल कार्यों को भी ठीक ढंग से करता है। सामान्य जनसंख्या का करीब 0.2% लोगों में यह रोग पाया जाता है।

व्यक्तित्वलोप विकृति (Depersonalization Disorder)

व्यक्तित्वलोप विकृति एक ऐसी विकृति है जिसमें व्यक्ति स्वयं का प्रत्यक्षण या अनुभव एक अलग व्यक्ति के रूप में करता है। व्यक्ति स्वयं को एक यंत्रवत् चलने वाला प्राणी समझता है। उसे यह अनुभव होता है कि वह अपनी मानसिक एवं शारीरिक प्रक्रियाओं का प्रेक्षण एक बाहरी प्रेक्षक के रूप में कर रहा है। इसमें रोगी को संवेदना का अभाव, भावात्मक अनुक्रियाओं में कमी, अपनी ही क्रियाओं पर नियंत्रण खोने का भाव आदि होता पाया जाता है। इनमें वास्तविकता का परख बिल्कुल ठीक रहता है। ये स्वयं को यंत्रवत् प्राणी होने का अनुभव मात्र करते हैं, न कि एक यंत्र के रूप में।

DSM-IV में इस विकृति को एक मनोविच्छेदी विकृति के रूप में शामिल किया जाना एक विवादास्पद बिंदु है, क्योंकि व्यक्तित्वलोप व्यक्ति के रोगी में स्मृति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या नहीं पायी जाती है, जबकि अन्य सभी मनोविच्छेदी विकृतियों में इस तरह का लक्षण मुख्य रूप से पाया जाता है।

Scanned with CamScanner